मैं यह पूछना चाहता हूँ कि श्री जार्ज फर्नान्डीस को गिरफ्तार करने का क्या औचित्य है। रेल मंत्री ने आरोप लगाया कि श्री जार्ज फर्नान्डीस हड़ताल के लिए नहीं अपितु राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु इसका सबूत क्या है। केवल समाचारपत्रों में छपी रिपोर्टों के आधार पर उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाना चाहिये था। हड़ताल का पहला कारण वह उतावलापन है जिसमें गाड़ियां रद्द की जाने लगीं और हड़ताल के विरुद्ध चलाया गया व्यापक अभियान है। कर्मचारियों में यह भावना जागृत की गई कि उन पर कड़ा आक्रमण किया जाने वाला है। इस बात के बावजूद कि हड़ताल का नोटिस दिया जा चुका था, बातचीत चल रही थी और बातचीत भंग नहीं हुई थी। श्रमिक संघ के नेताओं और कर्मचारियों की बड़ी संख्या में गिरफ्तारी शुरू हो गई।

पहला प्रश्न जिसे हल किया जाना चाहिये, समन्वय समिति के नेताओं और समूचे देश में रेल कर्मचारियों की गिरफ्तारी है। यदि उन्हें शीघ्र रिहा किया जाये तो स्थिति बदल सकती है। इसके बाद हम एक-साथ बैठकर समाधान ढुंढ सकेंगे। अभी भी देर नहीं हुई है, मैं सरकार से अपील करता हूँ कि वह विरोधी दलों और केन्द्रीय श्रमिक संघ के नेताओं के साथ बैठकर यह सुनिश्चित करें कि हम इसका कोई समाधान ढुंढेंगे। यदि हम ऐसा कर सकेंगे तो शायद हम पुनः यह देख सकेंगे कि स्थिति सामान्य बन रही है। अन्यथा बड़ा टकराव होगा।

अध्यक्ष महोदय : प्रो० मधु दण्डवते।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : यह स्वीकार किया गया है कि एक स्वतंत्र और लोकतंत्री समाज में हड़ताल का अधिकार एक लोकतंत्री अधिकार है। सैद्धांतिक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति कर्मचारियों द्वारा हड़ताल किय जाने के अधिकार को मानता है किन्तु इस विशिष्ट अधिकार का कार्यान्वियन पसन्द नहीं किया जाता और न ही इसका अनुमोदन किया जाता है।

दूसरी ओर के अनेक सदस्यों ने कहा है कि विरोधी दलों के अनेक सदस्य किसान जैसे असंगठित क्षेत्र की उपेक्षा करके संगठित श्रमिकों को अधिकाधिक मांगों के लिए उत्तेजित करने का प्रयास कर रहे हैं। मैं सभा को स्मरण कराना चाहता हूँ कि समाजवादी और साम्यवादी दलों ने कुछ एक वर्ष पहले भूमि मुक्ति आन्दोलन छेड़ा था और कांग्रेसियों ने भूमि मुक्ति आन्दोलन में समाजवादियों का साथ नहीं दिया था। जब हम किसानों तथा भूमिहीनों के लिए कहते है, ग्रामीण जनता के लिए न्यूनतम वेतन मांगते है तो ये लोग हमारा साथ नहीं देते।

जहां तक कर्मचारियों की मांगों का सम्बन्ध है कुछ लोगों ने यह विचार व्यक्त किया कि भारत जैसे विकासशील देश में यदि हमें देश का निर्माण करना है, तो अपर्याप्त संसाधनों को जुटाने की समस्या को हल करना होगा। यदि कर्मचारियों की मांगों को स्वीकार करने में कोई कठिनाई है तो सरकार को श्रमिक संघों के साथ बैठकर उन्हें यह बताना चाहिये कि जहां तक बोनस के सिद्धांत का प्रश्न है, सरकार उसे स्थगित मजदूरी के रुप में स्वीकार करती है। यदि यह सिद्धांत स्वीकार किया जायेगा तो सरकार के लिए श्रमिक संघों के साथ बैठकर बातचीत करनी होगी और उन्हें यह बताना होगा कि पर्याप्त संसाधनों को प्राप्त करने में क्या कठिनाई सामने आ रही है। इस बात का पता लगाया जा सकता है कि देश में श्रमिक संघ, रेलवे, सरकार और जनता किस प्रकार अधिक संसाधन जुटा सकते हैं और जब संसाधनों का चरणबद्ध रूप में विकास हो जायेगा तो बोनस के सिद्धांत तथा सरकारी क्षेत्र में समानता के सिद्धांत को लागू किया जा सकेगा।

प्रधान मंत्री, परमाणु ऊर्जा मंत्री, इलैक्ट्रानिक्स मंत्री और अन्तरिक्ष मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी): मैं नहीं जानती कि इस अविश्वास प्रस्ताव का क्या प्रयोजन है मेरे विचार से इसका उद्देश्य केवल यह दिखाना ही है कि विपक्षी दलों में एकता है। यदि उनमें एकता है तो यह बहुत प्रशंसनीय बात है। सबसे पहले मैं ही उसका स्वागत करूंगी।

[श्रीमती इन्दिरा गांधी]

यह कहना बिल्कुल गलत है कि हमारी नीति श्रमिक विरोधी है। कई सदस्यों ने यह कहा है कि हम श्रमिकों के अधिकारों के लिये लड़ते हैं किन्तु क्या वह बता सकते हैं कि जब उनकी सरकार बनी थी तो उन्होंने मजदूरों के लिये कौन से कानून पास किये थे। इसके विपरित हमने अनेक ऐसे कानून पास किये हैं।

हम सदैव वार्ता के लिये तैयार किये हैं और अनेक बार हमने श्रमिकों की मांगे स्वीकार की हैं।

किन्तु उससे सहयोग का वातावरण पैदा नहीं हुआ। एक मांग के पूरा होते ही दूसरी मांग पेश कर दी जाती है।

आज इस बात पर विचार नहीं करना है कि रेल कर्मचारियों को क्या दिया जाना है। प्रश्न यह है कि ऐसे समय जब देश अभाव के दौर से गुजर रहा है, रेल कर्मचारियो को क्या हम अधिक से अधिक दे सकते हैं। प्रश्न केवल रेल कर्मचारियों का ही नहीं है। और भी लाखों व्यक्ति हैं जिनकी कठिनाइयां को दूर किया जाना है।

रेल कर्मचारियों की देशभक्ति और कार्य के प्रति उनकी लगन की मैं सराहना करती हूँ।

दूसरी ओर से हड़ताल को वापस लेने का कभी संकेत नहीं दिया गया। यद्यपि बात-चीत चल रही थी तथापि हड़ताल न करने का आश्वासन किसी ने नहीं दिया। हम उसे रोकने के लिये हर प्रकार के प्रयत्न में जूटे रहे लेकिन हड़ताल की धमकी बराबर दी जाती रही। जहां तक गिरफ्तारीयों का सम्बन्ध है, वह तो काफी देर बाद में की गई।

कुछ लोगों ने श्री ललित नारायण मिश्र का मजाक उड़ाने का प्रयत्न किया। किन्तु केवल वही एक समाचार पत्र नहीं है जिसने इस प्रकार के भाषण प्रकाशित किये। मैंने धनबाद के समाचार पत्र के बारे में नहीं सुना है किन्तु मुझे मालूम है कि अंग्रेजी तथा देश की अन्य भाषाओं में नाम प्रकाशित हुए हैं किन्तु उन प्रतिवेदनों, भाषणों से उनकी विचारधारा प्रकट होती है।

हम रेल कर्मचारियों के हितों के बारे में चिंतित हैं किन्तु हमें देश के हित को भी देखना है और यदि किसी समय हड़ताल का देश के हितों पर बुरा प्रभाव पड़ता है तो कार्यवाही करनी होती हैं। जब तोड़-फोड़ की कार्यवाही हो रही हो—आज ही एक रेल के पटरी से उतर जाने का समाचार मिला है तो हमें इस सम्बन्ध में कार्यवाही करनी है। यदि हमने कार्यवाही न की तो समस्त राष्ट्र हमें दोषी ठहरायेगा (**व्यवधान**)। यदि हमने यह महसूस किया होता कि हड़ताल को रोकने की एक प्रतिशत भी आशा है, तो गिरफ्तारियां नहीं की जाती और अन्य प्रकार की अनेक कार्यवाहियां भी न की जातीं।

श्री श्यामनन्दन मिश्र (बेगुसराय) : आप गलत हैं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मैंने अपने विचार तथा जो मेरी जानकारी है वही प्रस्तुत की है।

एक बात यह है जिस पर हम सभी सहमत हैं। वह यह है कि इस समय देश एक अत्यधिक कठिन एवं गम्भीर संकट से गुजर रहा है। दूसरी बात यह है कि हड़ताल से निश्चय ही स्थिति और भी गम्भीर हो जायेगी। चूंकि अब हड़ताल की सूचना दी जा चुकी है और इसके लिए सभी तैयारियां की जा चुकी हैं . . (**व्यवधान**)। इस हड़ताल का देश के निर्धन तथा कमजोर वर्गों पर बुरा-प्रभाव पड़ेगा। अब आप हमसे हड़ताल रोकने के लिए कहते हैं। सरकार ने तो हड़ताल की सूचना नहीं दी है।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : रिहाई कीजिए और बातचीत आरम्भ कीजिए। (**व्यवधान**)

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मुझे हड़तालों की संख्या के बारे में चिन्ता नहीं है। मैं नहीं चाहती हूं कि इस बात पर वाद-विवाद हो कितनी गाड़ियां चल रही हैं और कितनी गाड़ियां नहीं चल रही हैं। ऐसे अनेक कर्मचारी हैं जो काम पर नहीं आये हैं और यदि उन्हें डराया नहीं जाता तो वे ड्यूटी से अनुपस्थित नहीं रहते। इसी सभा में विपक्ष के एक माननीय सदस्य ने कहा है कि उन्हें बड़ी संख्या में तार मिले हैं जिनमें कहा गया है कि रेल कर्मचारियों को डराया, धमकाया जा रहा है। तथ्य यह है कि उन्हें तार मिले हैं चाहे वे किसी से मिले हों और ऐसे कर्मचारियों की रक्षा की जानी चाहिए।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (अलीपुर) : क्या आपके रेल मंत्री प्रति धमकी नहीं दे रहे हैं ?

श्रीमती इन्दिरा गांधी : यह काफी बाद की स्थिति में हुआ है। मैं इसके विस्तार में नहीं जाना चाहती हूं क्योंकि पहले ही तोड़-फोड़ की कार्यवाही हुई है और यह योजनाबद्ध ढंग से हुई है।

हड़ताल एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है। हम हड़ताल के विरुद्ध नहीं हैं। यदि हड़ताल वैध हैं तो हम हड़तालों का समर्थन करते हैं। किन्तु राष्ट्र के जीवन में कभी ऐसा समय भी आता है जबकि अन्य बातों का अधिक महत्व होता है और आज ऐसा ही समय है। आज प्रत्येक व्यक्ति को यह देखना है कि वर्तमान स्थिति में सुधार हो। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हड़ताल से रेल कर्मचारियों को कोई लाभ नहीं होगा। इससे न केवल निर्धन वर्ग पर बुरा प्रभाव पड़ेगा अपितु इस से आम जनता को भी असुविधा होगी और इसका रेल कर्मचारियों और उनके बच्चों के भविष्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : क्यों न इसे निपटाने का प्रयत्न किया जाये ?

श्रीमती इन्दिरा गांधी : हमने इसे निपटाने का पूरा प्रयत्न किया है। हमारे विचार से इससे देश के निर्धन लोगों को अधिक असुविधा होगी। मैं रेल कर्मचारियों की कठिनाइयों को जानती हूं किन्तु यह कठिनाईयां केवल उनकी ही नहीं है अपितु सभी वर्गों की हैं। जो लोग आज संगठित नहीं है उन पर इसका बोझ अधिक है। जितना अधिक संगठित वर्ग को दिया जायेगा, उससे कम बेरोजगारों और अन्य वर्गों के लोगों को दिया जायेगा।

श्यामनन्दन मिश्र : केवल एक ही वर्ष में पश्चिम बंगाल में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में 75 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : इस समस्या का तभी समाधान हो सकता है जब बैठकर सोचे कि किस प्रकार इस का समाधान हो सकता है। हमारी समस्या शेष देश की समस्या से अलग नहीं है। यह एक व्यापक समस्या है। हम बातचीत करने के लिए तैयार हैं और देश के हित में उचित समझौता करना चाहते हैं। यही कारण है कि हड़ताल की सूचना दिये जाने के बाद भी हमने बातचीत जारी रखी। हम बातचीत के लिए हमेशा तैयार हैं।

हमें यह विचार करना है कि किसे धमकी दी जा रही है। यह हमारे लिए एक धमकी है और इसका हमारी अर्थव्यवस्था के लिए खतरा है और इसके गम्भीर परिणाम होने जा रहे हैं (**व्यवधान**)। हम केवल प्रतिरक्षात्मक कार्यवाही कर रहे हैं और जो उचित है वही कर रहे हैं। हम हड़तालियों के विरुद्ध सीमा सुरक्षा बल अथवा पुलिस अथवा सेना का प्रयोग नहीं करना चाहते हैं हम इनका प्रयोग रेलवे के हितों की रक्षा के लिए करना चाहते हैं जिनका समस्त लोगों के हितों से सम्बन्ध है।

Shri Phool Chand Verma (Ujjain) : Railway employees are being drawn out of their residences and are being beaten.

Smt. Indira Gandhi : It does not matter when you beat the people.

अध्यक्ष महोदय : मेरा आप सभी से निवेदन है कि उनके भाषण में हस्तक्षेप न करें।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मेरे साथी, रेल मंत्री ने जो अतिरिक्त धनराशि देने के लिए कहा है वह वेतन संशोधन तथा महंगाई भत्ते के अतिरिक्त है। किन्तु जो मांग की गई है वह बहुत अधिक है। वास्तव में कुछ लोगों ने निजी तौर पर कहा है कि सरकार के लिए इन मांगों को मानना बहुत कठिन है . . . (व्यवधान)।

हम जानते हैं कि देश में मजूरी का ढांचा वह नहीं है जो होना चाहिए। हम जानते हैं कि इसमें बहुत हद तक अन्याय है। यह विषमताओं और विरोधाभासों की पहेलियों से भरा है। इसमें सुधार करने के लिए बहुत कुछ किया गया है। इसका यह अर्थ नहीं है कि हमने इसका संतोषजनक हल निकाल लिया है यह नितांत आवश्यक है कि कुछ समरूपता लायी जाय किन्तु यह काम एक रात में पूरा नहीं किया जा सकता है। सरकार इस पर विचार कर रही है और इस सम्बन्ध में माननीय सदस्यों के रचनात्मक सुझावों का आदर करेंगे। कुछ वास्तविक कठिनाइयां है और हमें उन्हें दूर करने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। हमने अन्य मांगों को माना है। किन्तु इससे और मांगे बढ़ी हैं यह एक सतत प्रक्रिया है।

अब समय आ गया है कि हम सब को मिलकर आर्थिक संकट का सामना करना चाहिए। मेरा व्यक्तिगत यह विश्वास है कि योजना असफल नहीं रही है। हमें कुछ समंजन करने हैं क्योंकि ईंधन तथा अन्य विभिन्न संसाधनों के मूल्य में वृद्धि हुई है। हम इन कठिनाईयों के बावजूद भी आगे बढ़ रहे हैं। कठिनाइयों को कम करने का अर्थ यह नहीं है कि नई कठिनाइयां पैदा की जाएं। हमें उत्पादन बढ़ाना है और उसका उचित वितरण सुनिश्चित करना है। मैं यह महसूस करती हूं कि वितरण उचित नहीं है किन्तु यह तत्काल और विशेष रूप से आर्थिक कठिनाई के समय नहीं किया जा सकता है।

विपक्ष के नेताओं ने यह घोषणा करने में संकोच नहीं किया है कि उनका उद्देश्य सरकार को कमजोर करने का है किसी भी दिन के समाचार पत्र देख लीजिए आपको इस प्रकार के कई वक्तव्य पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों में मिलेंगे। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है यदि सरकार या कांग्रेस कमजोर होती है किन्तु यदि देश कमजोर होता है तो यह चिन्ता की बात है।

कांग्रेस ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब से सत्ता संभाली है उसने मजदूरों के अधिकारों में सुधार किया है तथा उनके कल्याण पर अधिक ध्यान दिया है। गत कुछ वर्षों में हमारी नीतियां पहले से अधीक श्रमिकों के समर्थन में रही हैं। मैं तो यह कहुंगी कि गत पांच वर्षों में देश के इतिहास में मजदूरों के हित के लिए इतना अधिक काम किया गया है जितना कि पहले कभी नहीं किया गया। किन्तु श्रमिकों के समर्थन का अर्थ यह नहीं है कि उचित अनुचित सभी मांगों के स्वीकार किया जाय हम श्रमिक समर्थक हैं किन्तु हम देश के हित के समर्थक भी हैं। देश के हित पहले हैं और ये हित किसी एक वर्ग के हितों से कहीं अधिक हैं। आज हम उन मांगों को जिनका अन्य वर्गों की ओर संकेत किया गया है, नहीं मान सकते हैं। दूसरी बात यह है कि विपक्ष ने प्रत्येक बात को मेरे ऊपर मढ़ने का प्रयत्न किया है तथा किसी भी कार्यक्रम का विकल्प नहीं दिया है।

आल इन्डिया रेडियो का उल्लेख किया गया है। मैं स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि रेडियो का उद्देश्य सरकार की नीतियों का प्रसार करना नहीं है। यह कांग्रेस दल की नीतियां नहीं है। ये वे नितियां है जिन्ह संसद् तथा राज्य विधान सभाओं द्वारा स्वीकृत किया गया है और पास किया गया है।

श्री पीलू मोदी (गोधरा) : प्रधान मंत्री के अनुसार संसद् में केवल सरकार या बहुमत आता है मुझे खेद है कि मेरा संसद से यह अभिप्राय नहीं है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : श्री मोदी कोई भी अर्थ लगाने के लिए स्वतंत्र हैं। विश्व में कहीं भी विधान बहुमत से ही पास होता है, अल्पमत से नहीं। सरकार संसद तथा विधान मण्डलों द्वारा पारित नीतियों का अनुपालन करने के लिए वचनबद्ध है, और सरकार का यही मुख्य कार्य है।

प्रस्ताव में सरकार की असफलता के लिए आलोचना की गई है। वास्तव में यह विपक्ष का अपनी ही असफलता पर उनका हतोत्साहित होना है तथा सरकार का उन सभी बाधाओं पर काबू पाने पर सफलता है जिन्हें उन्होंने निरन्तर हमारे रास्ते में खड़ी की हैं (**व्यवधान**)।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : देश में जो समस्याएं हैं वे विपक्ष ने पैदा की हैं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मैं यह कह सकती हूं कि यह मैंने कभी नहीं कहा कि हमारी सभी कठिनाइयों के लिए विपक्ष दोषी है। मैंने यह कहा है कि विपक्ष लोगों के असंतोष का लाभ उठाता है। कुछ कठिनाइयां ऐसी हैं जो हमारी त्रुटियों के कारण होती हैं किन्तु बहुत सी कठिनाइयां ऐसी हैं जो कतिपय परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होती हैं। जैसे कि अन्तर्राष्ट्रीय संकट, बाहरी आक्रमण आदि से उत्पन्न होती हैं। मैं यह मानती हूं कि हमने गलतियां की हैं किन्तु हम हमेशा उन्हें सुधारने का प्रयत्न करते हैं। हमने कभी भी सम्मान का प्रश्न नहीं बनाया है . . . (**व्यवधान**)। मैंने यह स्पष्ट रुप से कहा है कि यदि जो लोग गिरफ्तार हुए हैं उन्हें रिहा करने से समस्या का समाधान हो सकता है। तो हमें ऐसा करने में कोई संकोच नहीं हैं।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : आप जेल का दरवाजा खोल सकते हैं किन्तु कम से कम बातचीत के लिए तो दरवाजा खोलिए।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मैं नहीं चाहती कि यह वाद-विवाद लम्बा चले। मैं फिर यह दोहराना चाहती हूं कि हमें रेल कर्मचारियों के साथ तथा उनके कष्टों के साथ पूरी सहानुभूति है। हम नहीं चाहते कि वे तथा उनके परिवार किसी प्रकार कष्ट में रहें। हम हमेशा उनके कष्टों के बारे में उनसे बातचीत के लिए तैयार हैं। उनकी अनेक मांगों को स्वीकार कर लिया गया है। इससे उनकी कई बुनियादी कठिनाइयां समाप्त हो जायेंगी किन्तु एक दो बाते ऐसी हैं जिन पर सरकार सहमत नहीं हो सकती है। यदि सदस्य स्वयं इस पर विचार करें तो उन्हें पता चलेगा कि ये ऐसी बातें हैं जिन पर हम अभी विचार नहीं कर सकते हैं। हम यह भी नहीं कह सकते कि हम सिद्धान्त रुप में सहमत हैं क्योंकि इससे अन्य वर्ग भी मांग पेश करेंगे। हम समूचे मजदूरी के ढांचे पर विचार कर रहें हैं। यही स्थिति है। मेरा यह तात्पर्य नहीं है कि विपक्ष गड़बड़ी पैदा करते हैं। मेरा यह भी तात्पर्य नहीं है कि विपक्ष कमी पैदा करता है।

कई माननीय सदस्यों ने यह स्वयं स्वीकार किया है कि अविश्वास प्रस्ताव का तात्पर्य अविश्वास से बिकुलल नहीं है और यह प्रस्ताव केवल इस कारण लाया गया कि कल वादविवाद की अनुमति नहीं दी गई थी . . . (**व्यवधान**) मुझे केवल यही कहना है कि कई माननीय सदस्यों ने कल अपना भाषण आरम्भ करते हुए कहा कि यह अविश्वास का प्रस्ताव नहीं आता यदि उस से पहले दिन इस पर स्थगन प्रस्ताव अथवा वादविवाद की अनुमति दी गई होती। चूंकि अब वादविवाद हो चुका है और उन्होंने जो कुछ कहना था कह चुके हैं तो अब मुझे आशा है कि वे अपना अविश्वास का प्रस्ताव वापस लेंगे।

श्री ज्योतिर्मय बसु : महोदय, मैंने प्रधान मंत्री को बहुत ध्यानपूर्वक सुना है किन्तु जितनी निराषा आज हुई है उतनी पहले कभी नहीं हुई। किन्तु आज उन्होंने बिना रुके भाषण दिया है जिससे उनके मन की बात का पता चलता है।